रात्रिक्लास 24-1-68 ओम्शान्ति शिव बाबा याद है?

अब पढ़ाई पढ़ रहे हो। और खान-पान की शुद्धता भी सीख रहे हो। क्या2 आप खाते थे कितना फर्क है। 60 वर्ष के एक वर्ष आगे क्या खाते थे। सभी कुछ खाते थे। क्योंकि बाप ने 60 वर्ष की वानप्रस्त अवस्था में प्रवेश किया ना। अभी यह पुरानी दुनिया ही बदलनी है। नई दुनिया में देवी देवताएं ही रहते हैं। नई दुनिया और पुरानी दुनिया में कितना फर्क है। बहुत फर्क है। तुम कह सकते हो आज रावण राज्य है कल राम राज्य होगा। चित्र पर भी समझाते हो आज है रावण-राज्य पतित दुनिया कल पावन दुनिया होनी है। बच्चे जानते हैं तब तो समझाते हैं। कल जाना ही दूसरे जन्म में। दुनिया की कोई को भी यह ज्ञान में नहीं है आना है सतयुग आना है। इस दुनिया का विनाश होना है। गीता का एपीसुड है यह कोई भी जानते ही नहीं। तुम सिध कर बताते हो यह गीता का एपीसुड है। यह कोई जानते ही नहीं। हम राजयोग सीख रहे हैं। राजाई होती है सतयुग में। तो जरूर दूसरे जन्म में हमको राजाई पद पाना है। अभी है संगम युग फिर होगा सतयुग। और सभी धर्म विनाश को पाते हैं। तुम्हारी बुधि कितनी दूरन देश जाती है। बाप को घर को स्वर्ग को भी जानते हो। कल स्वर्ग आने वाला है। बच्चों को ही यह नाले मिली हुई है ना। गायन भी अति ईन्द्रिय सुख गोप गोपियों से पूछो। यह पिछाड़ी की अवस्था है। अभी इतना हर्षित नहीं रहते हैं जितना पिछाड़ी में रहते हैं। पिछाड़ी में निश्चय भी अडोल रहता है। अभी तुम बच्चे समझते हो हम युनिवर्सिटी में भी रहते हैं तो हास्टल में भी रहते हैं। बाहर का संग बच्चों को न लगे इसलिये हास्टल में बिठाया जाता है। टीचर के साथ भी होंगे। बाहर के संग से दूर रहना अच्छा है। तुम्हारी भी स्टुडन्ट लाईफ है। ऐसे नहीं हास्टल में रहने वाले ही पास होते हैं। ऐसे भी नहीं हैं। कोई2 खरमगज बच्चे साहुकारों के भी होते हैं कोई आर्डर कर सकते हैं। हास्टल में रहने वालों का खर्चा भारी आता है। शरीर निर्वाह अर्थ बाहर ही रहना पड़ता है। क्योंकि ऐसे अगर अलौ किया जाये यहां रहने का तो बहुत ऐसे आ जावें। भल स्कालर्शिप एवुल हैं तो भी नहीं ऐसे कर सकते। शरीर निर्वाह लिये करना ही पड़े। आगे चल हो सकता है। जैसे तुम रहते हो ऐसे रहे। और यहां यज्ञ की सेवा करने भी बहुत आते हैं। उन्हों की कमाई बहुत भारी होनी है। अच्छा बच्चों को गुडनाईट।

पाईन्टस :- देह अभिमानी कर बाप के दिल पर चढ़ न सके। जो दिल पर नहीं चढ़ा। गायन बड़ी अवस्था है। देह का अहंकार इतना आ जाता है जो एकदम बुधि ही चट हो जाती है। इसलिये बाप कहते हैं खबरदार रहो। महारथियों पर ही माया का वार होता है। अच्छे2 बच्चे जो बाप को भी मोटर में घूमाती थी वह आज है नहीं। बाप तो वारनिंग देते रहते हैं। योगबल न होगा तो बाप कटेंगे नहीं। याद बिगर पावन कैसे बनेंगे।

बाप कहते हैं तुम बच्चों को बहुत मीठा बनना है। बाप कितना मीठा है। उनके ही तुम बच्चे हो ना। तो जैसे वह मीठा है वैसे तुम बच्चों को भी होना चाहिए। जैसे वह ज्ञान का सागर सुख का सागर प्रेम का सागर है तुमको भी ऐसा बनना है। जब तुम देवता होंगे तो तुम्हारी महिमा और होगी। अभी तुम्हारी महिमा और है। मनुष्यों की महिमा और तुम संगमयुगी ब्राह्मणों की महिमा अलग है। जिसको कोई भी नहीं जानते। यह संगम युग की पढ़ाई पढ़े तब पता पड़े। मनुष्यों को तो कुछ भी पता नहीं है। कृष्ण को ही द्वापर में ले गये हैं। कि द्वापर में गीता सुनाई। यह कैसे हो सकता। तो अपने ऊपर नजर रहनी चाहिए। बाप ने कहा है देही अभिमानी भव। मामेकं याद करो तो पाप भस्म होंगे। सारे विश्व को पवित्र बनाने तुम निमित बनते हो। कितनी अलौकिक सर्विस है। तुम ब्राह्मणों के सिवाय और कोई यह अलौकिक सर्विस कर न सके।

मक्खन=मीठे *:-*****:-*